



“सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।”

शोध पत्र

शोध निर्देशिका— डॉ. पूजा बेनीवाल, सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर
नीता आर्य, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश —

आधुनिक युग में नारी की भूमिका पारंपरिक सीमाओं से परे जाकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुकी है। आज की महिला केवल परिवार की संरक्षिका नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सक्रिय सहभागी बन चुकी है।

वर्तमान युग में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति में तीव्र परिवर्तन हुआ है। महिलाओं का रोजगार के क्षेत्र में बढ़ता हुआ योगदान न केवल उनके आत्मनिर्भर बनने का प्रमाण है, बल्कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ करता है। बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ एक ओर महिलाओं का रोजगार क्षेत्र में प्रवेश बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर समाज में यह प्रश्न भी उठने लगा है कि कार्यरत माताएँ अपने बच्चों को कितना समय दे पाती हैं और क्या उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर इसका कोई प्रभाव पड़ता है?

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य सेवारत (working) एवं गैर-सेवारत (non-working) महिलाओं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि क्या माताओं का रोजगार बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

इस शोध में 400 विद्यार्थियों (200 सेवारत महिलाओं के बच्चे एवं 200 गैर-सेवारत महिलाओं के बच्चे) का चयन किया गया। इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि सेवारत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि औसतन अधिक पाई गई। इसका कारण यह पाया गया कि सेवारत माताएँ अपने बच्चों में आत्मनिर्भरता, अनुशासन, समय प्रबंधन और शिक्षा के महत्व को अधिक प्रभावी ढंग से स्थापित करती हैं। वहीं गैर-सेवारत माताएँ बच्चों को अधिक समय देने के बावजूद कभी-कभी अनुशासनात्मक दृष्टि से थोड़ी उदार रहती हैं, जिससे अध्ययन की निरंतरता में कमी देखी जाती है।

शोध के निष्कर्ष के अनुसार, महिला का रोजगार बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं करता, बल्कि उचित संतुलन बनाए रखने पर यह सकारात्मक प्रभाव डालता है। अतः समाज को इस भ्रम से बाहर आना होगा कि कार्यरत माताएँ अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पातीं। वास्तव में, ऐसी माताएँ बच्चों को शिक्षा के महत्व का जीता-जागता उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

मुख्य शब्द – सेवारत महिला, गैर-सेवारत महिला, बालक, शैक्षिक उपलब्धि।

परिचय –

भारतीय समाज में महिला को सदा से “गृहिणी” एवं “ममता का प्रतीक” माना गया है। परंतु आधुनिक युग में महिला ने अपने अस्तित्व को केवल गृहिणी की सीमा तक सीमित नहीं रखा है, बल्कि शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, व्यवसाय एवं विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

सेवारत महिला समाज में एक सक्रिय भूमिका निभाती है। वह न केवल आर्थिक रूप से परिवार का सहयोग करती है, बल्कि अपने बच्चों के लिए एक प्रेरक आदर्श के रूप में भी कार्य करती है। वहीं दूसरी ओर, गैर-सेवारत महिला बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करती है और उनके पालन-पोषण में भावनात्मक जुड़ाव अधिक रहता है।

मानव जीवन में शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को ज्ञानवान बनाती है, बल्कि उसके चरित्र, व्यवहार, सामाजिकता और व्यक्तित्व को भी विकसित करती है। बालक का शैक्षिक विकास मुख्य रूप से परिवार, विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण पर निर्भर करता है, जिनमें परिवार का योगदान सबसे प्रमुख है। परिवार के दो स्तंभ – माता और पिता, दोनों का बालक के विकास में विशेष योगदान होता है।

विशेष रूप से माता की भूमिका बालक के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है। वह बालक की पहली शिक्षक होती है। बालक का प्रारंभिक शिक्षण, व्यवहारिक संस्कार, अनुशासन एवं नैतिकता का बीज मातृत्व के सान्निध्य में ही अंकुरित होता है।

परंतु जब महिला घर से बाहर कार्यरत होती है, तो यह प्रश्न उठता है कि क्या वह अपने बालक को वही समय, स्नेह और देखभाल दे पाती है जो एक गैर-सेवारत महिला देती है? इस प्रश्न ने समाज में अनेक मतभेदों को जन्म दिया है।

एक ओर यह विचार प्रचलित है कि सेवारत महिला के पास बच्चों के लिए पर्याप्त समय नहीं होता, जिससे बालक की शिक्षा एवं अनुशासन प्रभावित होते हैं। दूसरी ओर यह मत भी दिया जाता है कि सेवारत महिलाएँ अपने बच्चों को अधिक प्रेरित करती हैं क्योंकि वे आत्मनिर्भरता, परिश्रम और समय प्रबंधन का वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

वर्तमान समय में यदि हम समाज में चारों तरफ देखते हैं तो शैक्षिक उपलब्धि एक विकट समस्या है। आज हम देख रहे हैं परिवार में समायोजन नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण है कि व्यक्ति की अलग-अलग आकांक्षाएँ होती हैं। इन आकांक्षाओं की वजह से भी वह अपने आप का समायोजन नहीं कर पाता है। आज घर टूटने की समस्या ज्यादा उत्पन्न हो रही इसका भी कारण यह है कि वह अपना परिवार में समायोजन नहीं कर पा रही है अगर वह समायोजन नहीं कर पा रही है तो घर का वातावरण कलहयुक्त हो जाता है इस प्रकार की समस्याएँ बालकों में भी पायी जाती हैं। यदि पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण बालकों के अनुकूल ना हो तो इसका प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

आज का बालक ही देश का कर्णधार है और इनके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि शिक्षा के बिना कोई भी समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान नहीं बना सकता है प्रत्येक बालक का आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक स्तर एक-दूसरे से भिन्न होता है और प्रत्येक बालक की संतुष्टि का स्तर भी भिन्न होता है। जब बालक का आर्थिक व सामाजिक स्तर एक-दूसरे के भिन्न होता है तो बालकों की शैक्षिक रुचि, शैक्षिक संतुष्टि, शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताएँ भी शैक्षिक स्तर को प्रभावित करती हैं इस प्रकार बालक की शैक्षिक उपलब्धि में शिक्षा, पाठ्यक्रम, विद्यालय व पारिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और पारिवारिक वातावरण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जिसके कारण उनके बालकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सीधा असर पड़ता है।

इस प्रकार यह विषय अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना की जाए, ताकि यह जाना जा सके कि माताओं के रोजगार का बच्चों की शिक्षा पर वास्तविक प्रभाव क्या है।

आज जब महिला शिक्षा एवं समान अवसरों पर बल दिया जा रहा है, तब यह अध्ययन केवल सामाजिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि नीतिगत एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इन दोनों प्रकार की माताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की संभावना सदैव रही है। यही इस अध्ययन का मुख्य आधार है।

यह शोध हमें यह समझने में सहायता करता है कि परिवार और पेशे के बीच संतुलन कैसे बच्चों की शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करता है।

समस्या का औचित्य –

शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि शिक्षा जीवन की आधारशिला है एवं परिवार में माता ही बालक की प्रथम गुरु होती है। माता ही बालक के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहायक सिद्ध होती है। क्योंकि बालक पर अगर सबसे ज्यादा कोई ध्यान देने वाला है तो वह उसकी माता होती है। सभी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का उसकी शारीरिक संरचना तथा अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों से सीधा संबंध होता है। शारीरिक संरचना अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियां व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। सभी व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य में भिन्नता विद्यमान रहने का यही कारण होता है। व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का सीधा संबंध व्यक्तित्व पर पड़ता है। वह अपनी परिस्थितियों के साथ समायोजन नहीं कर पाता है। इस प्रकार व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि अन्य कारणों के साथ-साथ व्यक्ति के मनोभावों से भी प्रभावित है अर्थात् जैसे मन के भाव होंगे व्यक्ति वैसा ही करेगा। व्यक्ति का मनोभाव उसकी शारीरिक संरचना अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों के स्त्रावों तथा पारिवारिक –वातावरण का ही परिणाम होता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बालक के सर्वांगीण विकास के महत्वपूर्ण कारकों के मानसिक स्वास्थ्य व शैक्षिक उपलब्धि पर बालकों की माताओं के सेवारत होने या गैर सेवारत होने का क्या प्रभाव पड़ता है। इसी का देखते हुए शोधार्थी द्वारा उक्त शोध समस्या का चयन किया गया है।

समाज में यह आम धारणा है कि कार्यरत माताएँ अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पातीं, जिसके कारण उनके बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। जबकि कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि सेवारत महिलाओं के बच्चे आत्मनिर्भर, अनुशासित और अधिक परिश्रमी होते हैं।

बालक के सर्वांगीण विकास में मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब बालक को घर पर उचित वातावरण नहीं मिलता है तो बालक अपने कार्य को लग्न व परिश्रम से सम्पादित नहीं कर पाता है न ही उसे कार्य करके आत्म-सन्तुष्टि मिलती है और वह समाज का उपयोगी सदस्य भी नहीं बन पाता है। हमारा शोध कार्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी उस स्थिति में होते हैं जहाँ उनका चहुँमुखी विकास होना होता है। यह वह स्तर होता जहाँ उचित मार्ग पर अग्रसर होता है छात्रा इस स्तर पर बालकों को यदि उचित निर्देशन नहीं मिलता है तो छात्र भटक जाता है अर्थात् वह गलत रास्ते का चुनाव करता है। उसे अपना करियर बनाने का रास्ता नहीं मिलता है और विद्यार्थी की प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। अगर बालक सही रास्ते का चुनाव नहीं कर पाता है और उसके घर का जो वातावरण है उससे बालक की शैक्षिक उपलब्धि भी आशानुकूल नहीं होती है एवं ऐसे विद्यार्थियों की सामाजिक उपयोगिता भी प्रभावित हो जाती है। वह न तो अपनी पढ़ाई कर पाता है और न ही समाज में वह अपना स्थान बना पाता है।

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में

आधुनिक समाज में पारंपरिक भूमिकाएँ बदल रही हैं। आज महिलाएँ न केवल गृहिणी हैं बल्कि प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर और वैज्ञानिक भी हैं। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि उनके रोजगार का पारिवारिक और शैक्षिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक विकास के संदर्भ में

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि समाज की प्रगति का संकेतक है। यदि माताओं के रोजगार से बच्चों की उपलब्धि पर कोई विशेष प्रभाव पड़ता है, तो यह शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए दिशा-निर्देशक सिद्ध हो सकता है।

महिला सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में

यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि महिला की नौकरी बच्चों के विकास में बाधा नहीं है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। यह धारणा दूर करता है कि कामकाजी महिलाएँ "अच्छी माँ" नहीं बन सकतीं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से

बालक के आत्मविश्वास, प्रेरणा, अनुशासन और अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण पर माता के व्यवहार का सीधा प्रभाव होता है। सेवारत माताएँ अपने बच्चों में आत्मनिर्भरता और सामाजिक व्यवहार की भावना विकसित करती हैं, जबकि गैर-सेवारत माताएँ भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती हैं। इन दोनों के संतुलन का अध्ययन आवश्यक है।

नीतिगत महत्त्व

यदि शोध यह सिद्ध करता है कि कार्यरत माताओं के बच्चे भी समान या बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं तो इससे सरकार एवं समाज को महिलाओं को रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

इस प्रकार इस विषय का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह समाज में व्याप्त भ्रमों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्पष्ट करता है और बालकों के सर्वांगीण विकास में माता की भूमिका को पुनर्परिभाषित करता है।

समस्या कथन —

“सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।”

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. सेवारत महिलाएँ – सेवारत महिलाओं से तात्पर्य वे महिलाएँ, अपने कार्यों के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से परिवार के लिए अर्थोपार्जन करती हैं। वे सेवारत महिलाओं की श्रेणी में आती हैं। सेवारत महिलाएँ अपने जीविकोपार्जन के लिए नौकरी करती हैं।
2. गैर सेवारत महिलाएँ – गैर सेवारत महिलाओं से तात्पर्य यह है कि जो महिलाएँ घर की चार दीवारी में रहकर घर का ही कार्य संभालती हैं। ये महिलाएँ केवल घर का ही कार्य करती हैं। अर्थोपार्जन के लिए घर से बाहर नहीं जाती हैं।
3. शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। दूसरे शब्दों में विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाली उस कक्षा की क्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र में की जाती है। शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा का वातावरण, पारिवारिक आर्थिक स्तर, विद्यालयी समायोजन सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, रुचियों तथा आकांक्षा का स्तर आदि घटक प्रभावित करते हैं।

प्रस्तावित शोध का परिसीमन –

- शोधकार्य का क्षेत्र राजस्थान राज्य के जयपुर जिले तक ही सीमित रहेगा।
- शोधकार्य में न्यादर्श रूप में 400 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
- शोध कार्य हेतु सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बालकों को ही आधार बनाया जायेगा।

शोध के उद्देश्य –

- सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ –

- सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :-

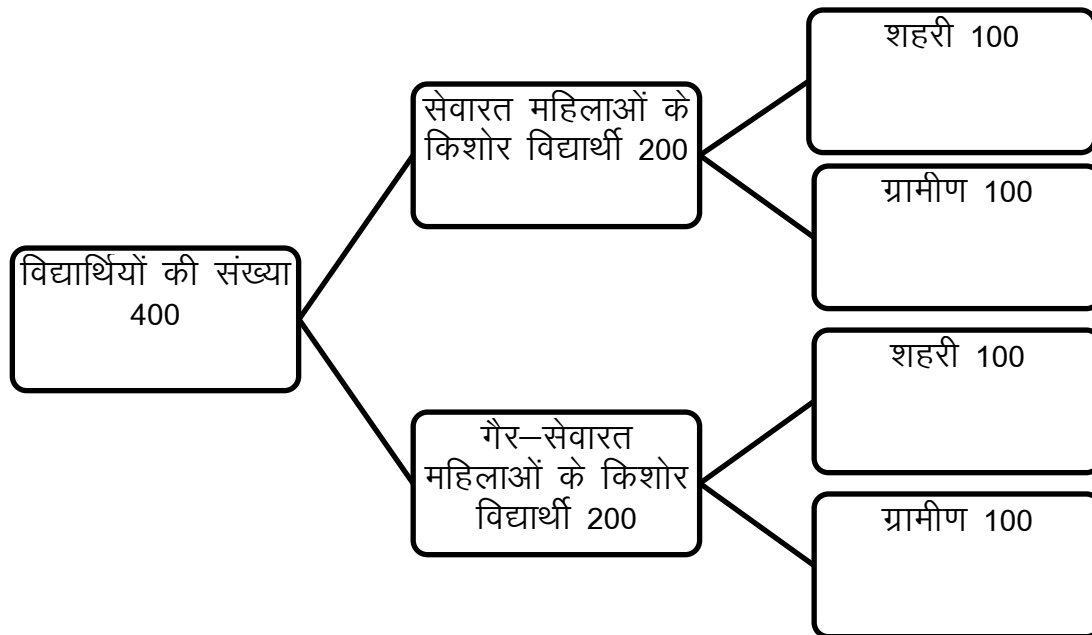
अध्ययन विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार कार्य करने की प्रणाली से है तथा वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन द्वारा सत्य की खोज करना। प्रस्तुत अनुसंधान में 'सर्वेक्षण विधि' का चयन किया जायेगा।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के समस्त किशोर विद्यार्थियों (छात्र/छात्राओं) को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया जायेगा।

न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के 400 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।



अध्ययन में प्रयुक्त चर –

स्वतंत्र चर –

- सेवारत महिलायें
- गैर सेवारत महिलायें

आश्रित चर –

- बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में उच्च माध्यमिक स्तर (12वीं कक्षा) के विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर का मापन करने हेतु उनके 11 वीं कक्षा के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का सत्यापन –

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने शोध में निर्मित परिकल्पनाओं की सत्यता की जांच एवं प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है –

परिकल्पना 1 सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या1

सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थी	200	61.09	11.19	4.37	अस्वीकृत
गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थी	200	57.71	10.18		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.96 स्वतंत्रता के अंश = 398

0.01 सार्थकता स्तर = 2.58

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 61.09 एवं मानक विचलन 11.19 है तथा गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 57.71 एवं मानक विचलन 10.18 है तथा स्वतंत्रता के अंश 398 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 4.37 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अर्थात् सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना “सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2 शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या2

शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	50	61.66	12.45	0.60	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	50	60.74	9.08		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 सार्थकता स्तर = 2.61

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 61.66 एवं मानक विचलन 12.45 है तथा गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 60.74 एवं मानक विचलन 9.08 है तथा स्वतंत्रता के अंश 98 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.60 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.98 एवं 2.61 से कम है। अर्थात् शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना “शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3 शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या3

शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	50	59.32	11.14	4.64	अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	50	52.59	9.27		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 सार्थकता स्तर = 2.61

तालिका संख्या 4.8 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 59.32 एवं मानक विचलन 11.14 है तथा गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 52.59 एवं मानक विचलन 9.27 है तथा स्वतंत्रता के अंश 98 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 4.64 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.98 एवं 2.61 से अधिक है। अर्थात् शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना “शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 4 ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या4

ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	50	62.98	9.82	3.03	अस्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	50	58.63	10.48		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 सार्थकता स्तर = 2.61

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 62.98 एवं मानक विचलन 9.82 है तथा गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 58.63 एवं मानक विचलन 10.48 है तथा स्वतंत्रता के अंश 98 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.03 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.98 एवं 2.61 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना “ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 5 ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या5

ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	50	60.43	11.00	1.03	स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	50	58.90	10.06		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98 स्वतंत्रता के अंश = 98

0.01 सार्थकता स्तर = 2.61

तालिका संख्या 5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 60.43 एवं मानक विचलन 11.00 है तथा गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 58.90 एवं मानक विचलन 10.06 है तथा स्वतंत्रता के अंश 98 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.03 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.98 एवं 2.61 से कम है। अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना “ग्रामीण क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 6 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या6

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	100	87.07	27.38	2.39	अस्वीकृत
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालक	100	81.15	27.30		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.96 स्वतंत्रता के अंश = 1.98

0.01 सार्थकता स्तर = 2.58

तालिका संख्या 4.17 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 87.07 एवं मानक विचलन 27.38 है तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 81.15 एवं मानक विचलन 27.30 है तथा स्वतंत्रता के अंश 198 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.39 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना “ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 7 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या7

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात

चर	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	100	89.01	25.74	3.28	अस्वीकृत
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाएँ	100	81.08	28.36		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.96 स्वतंत्रता के अंश = 198

0.01 सार्थकता स्तर = 2.58

तालिका संख्या 7 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 89.01 एवं मानक विचलन 25.74 है तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की गैर-सेवारत महिलाओं की किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 81.08 एवं मानक विचलन 28.36 है तथा स्वतंत्रता के अंश 198 पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.28 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक क्रान्तिक अनुपात मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना “ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सेवारत एवं गैर-सेवारत महिलाओं के किशोर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।” अस्वीकृत की जाती है।

शोध परिणामों से स्पष्ट होता है कि रोजगार मातृत्व की गुणवत्ता को कम नहीं करता, अपितु यदि उचित संतुलन रखा जाए तो यह बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

सेवारत महिलाओं के बच्चों में आत्म-विश्वास, सामाजिकता एवं समस्या-समाधान की क्षमता अधिक देखी गई।

गैर-सेवारत माताओं के बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव प्रबल है, किन्तु कभी-कभी प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति का अभाव देखा गया।

मुख्य निष्कर्ष –

- सेवारत माताएँ अपने बच्चों में आत्म-अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण और समय प्रबंधन की भावना अधिक विकसित करती हैं।
- गैर-सेवारत माताएँ भावनात्मक रूप से अधिक संलग्न रहती हैं, परंतु कभी-कभी अत्यधिक लाड़-प्यार बच्चों की एकाग्रता पर विपरीत प्रभाव डालता है।
- सेवारत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि औसतन अधिक पाई गई।
- माताओं की शिक्षा, अनुशासनप्रियता एवं समय प्रबंधन की प्रवृत्ति बच्चों को प्रेरित करती है।
- रोजगार का बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक नहीं, बल्कि संतुलित रूप से सकारात्मक प्रभाव देखा गया।
- माताओं की भूमिका चाहे गृहिणी की हो या कार्यरत महिला यदि वह समय, प्रेम और अनुशासन का संतुलन बनाए रखे तो बालक की शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित होती है।

सुझाव –

- सेवारत माताओं को अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय (quality time) व्यतीत करना चाहिए।
- विद्यालयों को माताओं के साथ संवाद बढ़ाना चाहिए ताकि घर एवं विद्यालय दोनों स्तरों पर सहयोग हो।
- गैर-सेवारत माताओं को भी बच्चों में आत्मनिर्भरता एवं अनुशासन की भावना विकसित करने पर बल देना चाहिए।
- सरकार को कार्यरत माताओं हेतु फ्लेक्सिबल कार्य समय एवं डे-केयर जैसी सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए।

संदर्भ सूची –

- Singh, R. (2019). *Mahila rojgaar aur parivarik jeevan mein parivartan* [महिला रोजगार और पारिवारिक जीवन में परिवर्तन]. New Delhi: National Publishing House.
- Sharma, S. (2020). *Shaikshik manovigyan evam baal vikas* [शैक्षिक मनोविज्ञान एवं बाल विकास]. Agra: Vinod Pustak Mandir.
- Kaul, L. (2018). *Shiksha anusandhan ki vidhiyan* [शिक्षा अनुसंधान की विधियाँ]. New Delhi: Vikas Publishing House.

- Verma, P. (2021). *Mahila sashaktikaran aur bal shiksha par prabhav* [महिला सशक्तिकरण और बाल शिक्षा पर प्रभाव]. Jaipur: Rajasthan University Press.
- Dutt, R. (2017). *Karyarat mahilaon ki jeevanshaili evam parivarik parivesh* [कार्यरत महिलाओं की जीवनशैली एवं पारिवारिक परिवेश]. Bhopal: Sahitya Sadan.
- Tripathi, S. (2019). *Mahila shiksha aur samajik parivartan* [महिला शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन]. New Delhi: Hindi Granth Academy.
- Mishra, S. (2022). *Shiksha samajshastra* [शिक्षा समाजशास्त्र]. Lucknow: Universal Education Publication.
- Gupta, A. (2020). *Sewarat mataon ke balakon ki shaikshik upalabdhi ka adhyayan* [सेवारत माताओं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन] (Doctoral dissertation). Devi Ahilya University, Indore.
- Agarwal, M. (2018). *Mahilaon ki bhoomika evam parivarik sanrachna mein parivartan* [महिलाओं की भूमिका एवं पारिवारिक संरचना में परिवर्तन]. Meerut: Book Linkers.
- Bhartiya Shiksha Aayog. (1966). *Shiksha aur rashtriya vikas* [शिक्षा और राष्ट्रीय विकास]. New Delhi: Government of India.
- Rashtriya Shiksha Neeti. (2020). *National Education Policy 2020* [राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020]. New Delhi: Ministry of Education, Government of India.
- Verma, R. (2021). Effect of working mothers on academic achievement of students. *Indian Journal of Education Research*, 45(2), 67–78.
- Pandey, S. (2022). A comparative study of academic achievement among children of working and non-working mothers. *International Journal of Social Science & Education*, 12(3), 56–64.
- Rani, A., & Sharma, D. (2020). Impact of maternal employment on child's academic performance. *Journal of Educational Psychology*, 15(4), 45–59.
- Chandra, P. (2019). Parenting style and academic motivation among adolescents of working mothers. *Psychology and Education Journal*, 56(1), 112–122.
- Kaur, H., & Singh, R. (2018). Study of academic achievement among the children of employed and unemployed mothers. *Educational Review*, 60(3), 78–88.
- Mohan, S. (2020). Role of family environment in the educational achievement of students. *Asian Journal of Social Science Studies*, 8(2), 24–33.
- UNESCO. (2021). *Education and gender equality report*. Paris: UNESCO Publishing.
- World Bank. (2022). *Women's employment and educational outcomes in South Asia*. Washington, DC: World Bank Group.

- Bhatnagar, R., & Aggarwal, K. (2019). Mother's employment status and its impact on children's scholastic achievement. *Indian Journal of Applied Research*, 9(7), 21–25.
- Mishra, N., & Joshi, L. (2023). Correlation between working women's lifestyle and their children's academic performance. *International Education Studies*, 16(1), 102–116.
- Patel, M. (2018). Socio-economic status of working women and educational growth of their children. *Journal of Social and Human Values*, 10(2), 59–70.
- Aggarwal, J. C. (2019). *Essentials of educational psychology*. New Delhi: Vikas Publishing House.
- Best, J. W., & Kahn, J. V. (2020). *Research in education* (11th ed.). Boston: Pearson Education.
- Kumar, R. (2022). *Research methodology: A step-by-step guide for beginners* (5th ed.). New Delhi: Sage Publications.
- Ministry of Education. (2022). *Status of women's employment in education sector*. Government of India. Retrieved from <https://www.education.gov.in>
- National Sample Survey Office (NSSO). (2021). *Employment and unemployment situation in India (Report No. 563)*. New Delhi: Government of India.
- NCERT. (2020). *Learning achievement of secondary students: A comparative report*. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- UNICEF. (2021). *Mother's work and child development in South Asia*. Retrieved from <https://www.unicef.org/reports>
- UNESCO Institute for Statistics. (2023). *Gender parity index in education*. Retrieved from <http://uis.unesco.org>